P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-8* (Part-1) November- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

# गांधीजी के शिक्षा सम्बन्धी विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता

**बनवारीलाल मैनावत**
सह आचार्य,
राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गंगापुर सिटी (राजस्थान)

**सारांश**

सही शिक्षा के माध्यम से आदर्श समाज की नींव रखी जाती है। गांधीजी ने सभ्य समाज तथा देश के विकास के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा पर बल दिया था। शिक्षा स्त्री–पुरूष दोनों के लिए समान होगी। तत्कालीन अंग्रेजी शिक्षा योजना से वे असन्तुष्ट थे, जो कि अंग्रेजों के हित लाभ के लिए लागू की गई थी। इसमें राष्ट्रभक्ती, स्वावलम्बन, ग्रामोत्थान का उद्देश्य पूरा नहीं हो रहा था। उन्होंने अपनी शिक्षा योजना में बुनियादी शिक्षा एवं उच्च शिक्षा की बात की थी। इस शिक्षा योजना के माध्यम से स्वावलम्बी, शोषण विहिन, समानतायुक्त समाज का विकास हो सकता है तथा राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण और व्यक्ति के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास हो सकता है। गांधीजी की शिक्षा बहुशिक्षा है जो बालकों को आद्यात्मिक, बौद्धिक और शारीरिक क्षमताओं को विकसित तथा प्रोत्साहित करती है। वर्तमान भारत में शिक्षा का प्रसार तो हुआ है किन्तु युवाओं मे असंतोष भी बढ़ा है। वर्तमान में युवाओं को स्वावलम्बी चरित्रवान, देशभक्त तथा समाज सेवी बनाने की ओर प्रेरित करने की आवश्यकता है। एक असिंहक समाज बनाने की प्रेरणा देने की आवश्यकता है। इसके लिए नैतिक मूल्यों को नवाचारों के साथ शिक्षा से जोड़कर विद्यार्थियों की सामाजिक समझ और मानवीय समझ को विकसित किया जाए।

**मुख्य शब्द :** गांधीजी की शिक्षा योजना, आद्यात्मिक विकास, अक्षरज्ञान, सभ्यसमाज, सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास, बुनियादी शिक्षा, स्वावलम्बी, कुटीर उद्योग, सद्चरित्र, राष्ट्रीय चरित्र, रचनात्मक कार्य, असंतोष, बेरोजगारी, आत्मनिर्भरता, मानवीय समझ, अहिंसक समाज नवाचार।

**प्रस्तावना**

शिक्षा आदर्श समाज की नींव रखती है। गांधीजी की शिक्षा की धारणा व्यापक है तथा उसका आधार आद्यात्मिक है। वे भारत में प्रचलित शिक्षा प्रणाली से सन्तुष्ट नहीं थे। यह व्यक्ति का न तो आद्यात्मिक विकास करती है न ही व्यावहारिक ही बनाती है। अंग्रेजों के द्वारा चलाई गई शिक्षा पद्धति केवल अंग्रेजों के हितों के दृष्टीकोण से पनपी थी। शिक्षा का उद्देश्य केवल साक्षरता नहीं है बल्कि व्यक्ति को तत्व ज्ञान की पहचान और ज्ञान को आचरण में उतारने की प्रेरणा एवं क्षमता विकसित करना है। शिक्षा व्यक्ति के मानसिक, शारीरिक, आत्मिक विकास को एक साथ सुनिश्चित करती है। उनकी शिक्षा की धारणा में कोरे अक्षरज्ञान या बाहरी सूचनाओं का अधिक महत्व नहीं है। जिसने सत्य–अहिंसा को पूरी तरह जान लिया है, वह भले ही निरक्षर हो, पूर्ण ज्ञानी है। गांधीजी के अनुसार शिक्षा अच्छा समाज बनाने एवं समाज सेवा करने की प्रेरणा देती है।

**अध्ययन का उद्देश्य**

युवा असंतोष, बेकारी को सही दिशा की ओर मोड़ना एक सभ्य समाज एवं विकासवादी समाज की ओर कदम बढ़ाने की प्रेरणा। समयानुकूल नवाचार के साथ सामंजस्य बनाना।

**शिक्षा योजना**

गांधीजी ने शिक्षा की योजना दो भागों में वर्गीकृत की एक बुनियादी शिक्षा, दूसरी उच्च शिक्षा।

**बुनियादी शिक्षा**

गांधीजी ने बुनियादी शिक्षा में प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर की शिक्षा सम्मिलित की है। यह भारत की आवश्यकताओं के अनुरूप संगठित करना आवश्यक मानते थे। बुनियादी शिक्षा ग्रामोन्मुख बनाये जाने का सुझाव दिया।

शिक्षा, विद्यार्थियों को इस प्रकार दी जाए कि वे गॉवों की आवश्यकताओं को समझ सके तथा उनकी पूर्ति के लिए आवश्यक क्षमता अर्जित कर सके व ग्राम विकास के लिए समर्पणभावी बने।

1. शिक्षा के प्रारम्भ में बच्चों को अक्षर ज्ञान की बजाय इतिहास भूगोल, गणित, कताई आदि का मौखिक ज्ञान कराये, जिज्ञासु होने पर वर्णमाला सिखायें।
2. अन्य विषयों के साथ–साथ दस्तकारी या उद्योग की शिक्षा दी जाए, जिससे वह आत्मनिर्भर बन सके।
3. प्राथमिक शिक्षा सात वर्ष कम से कम दी जाए। यह मातृभाषा में होनी चाहिए। माध्यमिक स्तर तक अंग्रेजी अनिवार्य न हो।
4. विद्यार्थियों को साम्प्रदायिक शिक्षा न दी जाय किन्तु नैतिक शिक्षा दी जाए।
5. बालक–बालिकाओं में शिक्षा के लिए भेद न किया जाए। माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा अनिवार्य की जाए एवं निःशुल्क हो।

**उच्च शिक्षा**

उच्च शिक्षा में गांधीजी का दृष्टिकोण देश की रचनात्मक आवश्यकताओं से प्रेरित है।

1. उच्च शिक्षा में होने वाले व्यय का भार राज्य सरकार द्वारा उठाना चाहिए।
2. तकनीकी और इंजीनियरिंग कॉलेजों पर होने वाले व्यय का भार औद्योगिक प्रतिष्ठानों को वहन करना चाहिए।
3. कृषि महाविद्यालय स्वपोषी आधार पर संचालित किये जाये। इन महाविद्यालयों की गतिविधि कृषि के व्यावहारिक उत्पादन से जुड़ी होनी चाहिए।
4. मेडीकल शिक्षा के महाविद्यालयों का व्यय भार धनाढ्य और व्यापारी उठाये तथा इन्हें अस्पतालों के साथ सम्बद्ध कर दिया जाये।
5. कला संकाय महाविद्यालयों को निजि संस्थाओं द्वारा चलाया जाए। इनकी स्थापना व संचालन में राज्य सरकार व्यय उठाये क्योंकि इनमें साधारण ज्ञान उपलब्ध कराया जाता है।
6. उच्च शिक्षा राष्ट्रीय भाषा, अन्तःप्रान्तीय भाषा में दी जाय न कि अंग्रेजी में जिससे विद्यार्थियों में सही समझ बने। अंग्रेजी भाषा स्वेच्छिक होनी चाहिए।

**स्त्री शिक्षा**

स्त्रीशिक्षा पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि इन्हें गृह–प्रबन्धन, बाल–विज्ञान तथा संगीत आदि की शिक्षा दी जाए।

**प्रौढ़ शिक्षा**

अशिक्षित रहे प्रौढों को ऐसा ज्ञान देना चाहिए जो उनके चारों ओर वातावरण का ज्ञान कराये, उन्हें उसी से सम्बन्धित अक्षर ज्ञान कराया जाए। इसके अलावा देश की महत्ता व विशेषता का भाव जागृत करें तथा प्रौढों को मौलिक रूप से सच्ची राजनीतिक शिक्षा दी जाय।

गांधीजी की शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण व्यक्तित्व का विकास करना चाहती है। नैतिक, मानवता के गुणों के साथ तकनीकी ज्ञान, वैज्ञानिकता की सोच विकसित करना चाहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को उसकी रूचि के अनुसार कुटीर उद्योग का प्रशिक्षण/ज्ञान मिलना चाहिए। जिससे वह स्वावलम्बी बन सके। राष्ट्रभाषा, प्रान्तभाषा तथा मातृभाषा पर बल इसलिए देते हैं कि किसी भी ज्ञान को अच्छी तरह मातृभाषा में ही समझा जा सकता है तथा राष्ट्र भक्ती का भी भाव जागृत होता है। किसी भी समाज का विकास तभी हो सकता है जब स्त्री–पुरूष अधिक संख्या में शिक्षित हो। शिक्षा के माध्यम से नागरिकों में सद्चरित्र विकसित होता है जो राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण करता है। गांधीजी शिक्षा योजना के माध्यम से गरीब–अमीर सभी को भागीदार बनाते है तथा जिम्मेदारी उठाने का दायित्व देना चाहते हैं। साथ ही स्वास्थ्य, रोजगार, विज्ञान, राष्ट्रभक्ति आदि का विकास करना चाहते थे।

गांधीजी के अनुसार – ''शिक्षा से ही देश की उन्नति सम्भव है। शिक्षा सबके लिए समान एवं अनिवार्य व निःशुल्क होनी चाहिए। शिक्षा सबका अधिकार है, इस पर बल दिया है। शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति का आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक विकास हो सकता है। यह मानव की बौद्धिक, आद्यात्मिक एवं शारीरिक क्षमता विकसित करती है। साथ ही व्यक्ति को स्वावलम्बी बनाती है। सामाजिक समानता तथा शोषणविहीन समाज शिक्षा द्वारा ही संभव है।''

**वर्तमान में प्रासंगिकता**

आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने युवाओं में निराशा, कुण्ठा, बेकारी व्यक्तिगत विघटन आदि को जन्म दिया है। इसका मुख्य कारण यह है कि विद्यार्थी पुस्तको का कीड़ा तो बन गया है। किन्तु स्वावलम्बी नही बन सका है। समस्त स्कूल और कॉलेज की शिक्षा प(ति परीक्षा तक सीमित है। यह व्यावहारिक जीवन में विद्यार्थियों का साथ नहीं देती। शिक्षित विद्यार्थी बिना किसी उद्देश्य के असहाय समाज में इधर–उधर भटकता फिरता है। ऑफिसों के दरवाजे खटखटाता रहता है। गांधीजी की बेसिक शिक्षा पद्धति व्यक्ति को स्वावलम्बी बनाती है। कहीं कार्य मिले या न मिले वह स्वयं अपना छोटा–मोटा कार्य आरम्भ कर सकता है। वह आत्मनिर्भरता की भावना उत्पन्न करती है, साथ ही श्रम के प्रति आदर, प्रेम भी बढाती है। इस प्रकार यह छोटी सी योजना देश की बहुत बडी समस्या का समाधान करती है। गांधीजी की शिक्षा योजना से प्रेरणा लेते हुए वर्तमान शिक्षा प्रणाली को रोजगार परक तथा स्वावलम्बी बनाया जाए, उसमें आवश्यक सुधार किये जा सकते हैं। नवाचार को अधिक से अधिक बढावा दिया जाये।

गांधीजी के अनुसार शिक्षा केवल व्यक्ति को अक्षर ज्ञान और रोजगार के काबिल ही नहीं बनाती बल्कि यह व्यक्ति को आत्मिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान भी कराती है, साथ ही अच्छे नागरिक एवं सामाजिक व्यक्ति का चरित्र निर्माण भी करती है। वर्तमान शिक्षा अक्षरज्ञान एवं रोजगार के काबिल तो बनाती है, लेकिन यह व्यक्ति को भौतिकवादी भी बना रही है। इसमें नैतिक मूल्यों का स्थान कम है। स्वस्थ्य एवं सभ्य समाज के लिए नैतिक/आध्यत्मिक एवं अहिंसात्मक समाज का निर्माण होना आवश्यक है। आज समाज में हिंसा का रूप किसी न किसी रूप में बढ़ रहा है जो वर्तमान शिक्षा पद्धति पर प्रश्नचिन्ह लगाता है। जबकि पूर्व की अशिक्षित समाज में

कम मात्रा में था। नवीन तकनीक, संचार साधन तथा आधुनिक हथियार व परमाणु बम आदि से हिंसा बढ़ रही है, तो वर्तमान समाज को सभ्य समाज का दर्जा कैसे दिया जाए, गांधीजी अपनी शिक्षा योजना में बच्चों एवं विद्यार्थियों में सामाजिक एवं मानवीय समझ को अधिक बढ़ाने पर बल देते थे, जो व्यक्ति को सत्य–अहिंसा की ओर उन्मुख करती है। स्वतन्त्रता के समय भारत में शिक्षा 21 प्रतिशत थी जो वर्तमान में लगभग 70 प्रतिशत तक हो चुकी है, किन्तु संजलीजाटव (आगरा) को जिंदा जलाना, निर्भया काण्ड, रोहित वेमुला की खुदकुशी, अनेक बलात्कार काण्ड तथा हिंसा एवं हत्याओं की घटनायें, हमारे समाज को कहॉ ले जा रही है? यदि शिक्षा का प्रसार हुआ है तो सभ्य एवं अहिंसक सद्चरित्र वाली समाज का भी विकास होना आवश्यक है।

**निष्कर्ष**

गांधीजी की शिक्षा योजना के माध्यम से एक स्वावलम्बी, सद्चरित्र, सभ्य समाज की ओर कदम बढ़ाने की दिशा दी जा सकती है। युवाओं के बढ़ते असंतोष को उन्हें स्वावलम्बी, स्वरोजगार के लिए प्रशिक्षित करके तथा कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देकर, संसाधनों का सदोपयोग हेतु नवाचार एवं शोध कार्यों को बढ़ावा दिया जाकर भविष्यगामी समाज बनाई जा सकती है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची**

1. *चतुर्वेदी, मधुकर श्याम – प्रमुख भारतीय राजनीतिक विचारक, कॉलेज बुक हाउस, जयपुर।*
2. *इकबाल नारायण– प्रतिनिधि राजनीतिक विचारक, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा।*
3. *सरस्वती, सी.एम.– भारतीय राजनीतिक विचारक, मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ।*
4. *शर्मा, कुमुद – भारतीय राजनीतिक विचारक, अनुबुक्स, शिवाडी, मेरठ।*
5. *अवस्थी एवं अवस्थी – प्रतिनिधि भारतीय राजनीतिक चिन्तन, रिसर्च पब्लिकेशन जयपुर।*
6. *दत्त, धीरेन्द्र मोहन – महात्मा गांधी का दर्शन, बिहार ग्रन्थ अकादमी, पटना*
7. *प्रतापसिंह (संपादक) गांधीजी दर्शन, रिसर्च पब्लिकेशन, नई दिल्ली।*
8. *विभिन्न पत्र/पत्रिकाओं के अंक*
9. *इन्टरनेट साईट्स।*